ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997
Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (I):277-283

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

शीतला प्रसाद यादव एवं देवेन्द्र यादव

शिक्षक-शिक्षा विभाग,

नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज

Email: shitlaprasad080270@gmail.com

Received: 22.02.2025 Revised:02.05.2025 Accepted: 18.05.2025

सारांश

शोधार्थी द्वारा अपने शोध-पत्र के समस्या कथन के अन्तर्गत् ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन'' किया गया है। अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण के विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में संत रविदास नगर-भदोही जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग करके अध्ययन से न्यादर्श का चयन किया गया। अध्ययन में 300 छात्र एवं 300 छात्राओं का चयन किया गया है। उपकरण के रूप में पर्यावरणीय जागरूकता प्रश्नावली -डॉ0 प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित तथा पारिवारिक वातावरण मापनी -शालू सैनी एवं परमिन्दर कौर निर्मित किया गया है, का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी-अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि -माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता में अन्तर है अर्थात् प्राप्तांकों के विश्लेषण करने पर पाया गया कि पारिवारिक वातावरण का सीधा प्रभाव छात्रों के पर्यावरण जागरूकता पर है।

मुख्य बिन्दु *-माध्यमिक स्तर, छात्र-छात्राएँ, पर्यावरणीय जागरूकता, पारिवारिक वातावरण, तुलना, प्रभाव*

प्रस्तावना-

भारतीय संस्कृति में प्राकृतिक सुषमा के प्रति जितना आदर और आकर्षण है। सर्वविदित है कि

मनुष्य प्रकृति का पुत्र माना जाता है और प्रकृति समय एवं परिस्थिति के अनुसार माँ की ममता के समान सुरक्षा प्रदान करती है, लेकिन उलझनों पर पिता के समान क्रोध करती है। मानव अपनी विकास यात्रा के आरम्भ से ही अपने चारों ओर के वातावरण के विषय में चिन्तन करता रहा है। वातावरण संबन्धी यह ज्ञान बढ़ते-बढ़ते इतना अधिक हो गया कि इसे एक अलग विज्ञान 'पर्यावरण या पारिस्थितिकी' में रखा गया। पारिस्थितिकी का ज्ञान भारतीय ऋषि-मुनियों को प्राचीन काल में ही था जिसका उल्लेख हम वेदों, उपनिषदों, पुराण तथा अन्य प्राचीन ग्रन्थों में देख सकते हैं। प्राचीनकाल ऋषि चरक ने 200 ईसा पूर्व में ही पौधों के जीवन के लिए वायु, मिट्टी, जल तथा काल को परमावश्यक कारकों के रूप में प्रतिपादित किया था। यजुर्वेद में अन्तरिक्ष, पृथ्वी, वनस्पतियाँ, औषधियों तथा समस्त ब्रह्माण्ड में शान्ति की प्रार्थना की गयी है। ऋषियों ने वृक्ष रक्षा को धर्म के साथ जोड़कर वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया। उनके द्वारा निर्देशित जीवन पद्धति इस प्रकार की थी कि व्यक्ति जीव-जन्तुओं, पशुओं, वृक्षों व लताओं को हानि पहुंचाए बिना प्रकृति पर निर्भर रह सके।

पर्यावरण तथा मानव विकास का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति के विकास में पर्यावरण का महत्वपूर्ण योगदान है। पर्यावरण का सम्बन्ध विकास से भी है। प्रायः विकास का जो मार्ग हम चुनते है उसका प्रभाव वातावरण पर पड़ता है। हम पुल बनाते है, बाँध बनाते हैं, कल-कारखाने लगाते हैं ताकि विकास हो विकास की इस प्रक्रिया में हम प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करने लगते हैं। परिणाम यह होता है कि मानव तथा पर्यावरण के मध्य का संवेदनशील सम्बन्ध दुष्प्रभावित होता है।

पर्यावरण प्रदूषण तथा प्राकृतिक असंतुलन से जुड़ी अन्य समस्यायें है जैसे ओजोनपर्त की क्षति, अनियमित मानसून, अम्लवर्षा, ग्लोबल वार्मिंग तथा ग्रीनहाउस प्रभाव आदि भी जन्म लेती है।

इग्लैण्ड, फ्रांस आदि देशों से होती हुई पूरे विश्व में फैली औद्योगिक क्रान्ति ने पर्यावरण असंतुलन को जन्म दिया जो समूचे जनजीवन के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। इसके फलस्वरूप भूमि अपरदन, विभिन्न प्रकार के प्रदूषण तापक्रम में वृद्धि, अमूल्य वन्य जन्तुओं की लुप्त होती प्रजातियाँ, प्राकृतिक विपदायें आदि सृष्टि की अमरता पर प्रश्न चिन्ह लगा रहे हैं।

अब उचित समय आ गया है कि हम सचेत हो जाये। हमारे देश में भी पर्यावरण असंतुलन व प्रदूषण से निपटने कि लिए अनेक जन आन्दोलन चलाये गये- जैसे सुन्दरलाल बहुगुणा का चिपको-आन्दोलन, मेधापाटेकर का नर्मदा बचाओ आन्दोलन, आन्ध्र प्रदेश में शान्ति घाटी आन्दोलन, गुजरात में स्वामी वल्लभ का वृक्ष कटाई के विरूद्ध आन्दोलन आदि। सरकार की तरफ से अनेक मास्टर प्लान लागू किये गये है व समितियाँ गठित की गयी है। उद्योगांे तथा फैक्ट्रियों को रिहायशी क्षेत्रों से दूर स्थानान्तरित करने के लिए आदेश दिये गये है। राष्ट्रीय स्तर के साथ-साथ प्रादेशिक स्तर पर भी उपाय किये जा रहे हैं। जिसमें शिक्षण

संस्थाओं को भी भागीदार बनाया गया है।

जागरूकता हेतु जन-जागरण की आवश्यकता होती है क्योंकि कोई भी व्यवस्था अथवा नीति का अनुपालन उसके स्थायित्व से प्रभावित होता है। इस निमित्त हमें मानव में बाल्यावस्था से ही पर्यावरण के प्रति जागरूकता का प्रयास करना उचित होगा। इसके लिए विद्यालय प्रमुख स्थान है और विद्यार्थी प्रमुख माध्यम है।

वर्तमान में शिक्षण केन्द्र शिक्षार्थी को बाल्यकाल से सामाजिक तथा नैतिक शिक्षा प्रदान करते हैं। शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों से एक प्रकृति की रक्षा का भी है पर्यावरणीय प्रदूषण भी एक सामाजिक समस्या है। अतः विद्यालय का यह परम कर्तव्य है। कि बालक-बालिकाओं को पर्यावरण से सम्बन्धित ज्ञान दें। विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में प्रारम्भिक स्तर से ही पर्यावरण तथा प्रदूषण सम्बन्धी शीर्षकों को सम्मिलित किया जाये जिससे प्रदूषण के उन्मूलन में सहायता प्राप्त हो सके।

समाज में नन्हें-मुन्हं ही आगे चलकर देश के कर्णधार होंगे। अतः अध्यापकों का यह दायित्व बनता है कि वे बालकों को इस दिशा में जागरूक करें। चूँकि बालक अधिकांश समय विद्यालय में व्यतीत करता है। तथा किशोरावस्था में अभिभावकों की अपेक्षा शिक्षकों की बात अधिक मानते हैं अतः उचित पथ-प्रदर्शन से बालक तथा बलिकाओं में पर्यावरणीय जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है। जिससे वे भी अपने परिजनों, पड़ोसियों तथा मित्रों को जागरूक बनायेंगे।

आज कल विद्यालयों सामाजिक संगठनों, बाल क्लबों द्वारा चित्रकला, पोस्टर, वाद-विवाद, निबन्ध लेखन, नाटक कविता लेखन आदि प्रतियोगिताओं के आयोजन द्वारा तथा टी0वी0, रेडियों, होर्डिंग्स, गोष्ठियों, प्रदर्शनियां, समाचार पत्रों द्वारा भी पर्यावरणीय जागरूकता का प्रसार किया जा रहा है।

अतः पर्यावरण असंतुलन तथा प्रदूषण जैसी विकट समस्या को समूल नष्ट करने के लिए छात्र-छात्राओं को प्रारम्भ से ही जागरूक बनाना अति आवश्यक है ताकि वे भावी पीढ़ी को एक स्वच्छ, सुन्दर सम्पन्न धरोहर दे सकें।

दिन-प्रतिदिन सुविधाओं ओर प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का उपयोग करते समय हम ये भूल जाते है कि हमारे क्रियाकलापों से पर्यावरण को क्या क्षति हो रही है? खनिज निकालते समय अथवा वनों को अंधा-धुंध काटते समय हम यह भूल जाते है कि पर्यावरण का दोहन कर रहे है। पर्यावरण की उपेक्षा से जीवनदायिनी तत्वों तथा जलवायु, मृदा, वनस्पति आदि का प्रदूषण, अनेक रोग, प्राकृतिक विपदा आदि की वृद्धि जीवन को कष्टमय बना रहा है। ऐसी स्थित में इन कठिनाईयों से निजात पाने के लिए पर्यावरणीय शिक्षा की आवश्यकता प्रत्येक स्तर पर महसूस की जा रही है। इस निमित्त के प्रति जागरूकता के स्तर को केन्द्र बिन्दु बनाते हुए अनुसंधान कर प्रगति की समीक्षा का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया जा रहा है।

समस्या कथन-

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य-

समस्या कथन के आधार पर निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है-

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों में पर्यावरण जागरूकता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ-

उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है-

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता के प्राप्तांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण के छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता के प्राप्तांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण के विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

समष्टि - अध्ययन में संत रविदास नगर-भदोही जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श - साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग करके अध्ययन से न्यादर्श का चयन किया गया। अध्ययन में 300 छात्र एवं 300 छात्राओं का चयन किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

- पर्यावरणीय जागरूकता प्रश्नावली -डॉ0 प्रवीण कुमार झा
- पारिवारिक वातावरण मापनी -शालू सैनी एवं परमिन्दर कौर

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्राविधियाँ: अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी-अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या : उद्देश्य-1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों में पर्यावरण जागरूकता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन-

H_{01} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता के प्राप्तांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 1

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण के छात्रों की पर्यावरण जागरूकता के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-अनुपात

क्र0 सं0	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M_1~M_2)	मानक त्रुटि (S_{ED})	क्रान्तिक अनुपात (C.R. Value)	परिणाम
1	उच्च पारिवारिक वातावरण	118	31-43	7-51	3-90	1-10	3-71*	सार्थक
	निम्न पारिवारिक वातावरण	122	27-53	8-77				

*.01 एवं .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

व्याख्या-

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्रों के पर्यावरण जागरूकता का मध्यमान क्रमशः 31.43 एवं 27.53 तथा मानक विचलन क्रमशः 7.51 एवं 8.77 है। दोनों मध्यमान के बीच क्रान्तिक-अनुपात का मान 3.71 है जो 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर दिये गये मान 1.97 एवं 2.60 से अधिक है, अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत तथा शोध परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। परिणामतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्रों के पर्यावरण जागरूकता में विभिन्नता है।

प्राप्तांकों के विश्लेषण करने पर पाया गया कि पारिवारिक वातावरण का सीधा प्रभाव छात्रों के पर्यावरण जागरूकता पर पाया गया।

H_{02} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण के छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता के प्राप्तांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 4.06

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण के छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-अनुपात

क्र0 सं0	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M_1~M_2)	मानक त्रुटि (S_{ED})	क्रान्तिक अनुपात (C.R.Value)	परिणाम
1	उच्च पारिवारिक वातावरण	124	30-93	9-39	2-19	1-10	1-99	0.05 पर सार्थक 0.01 पर असार्थक
	निम्न पारिवारिक वातावरण	116	28-74	7-64				

*.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

व्याख्या-

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाली छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता का मध्यमान क्रमशः 30.93 एवं 28.74 तथा मानक विचलन क्रमशः 9.39 एवं 7.64 है। दोनों मध्यमान के बीच क्रान्तिक-अनुपात का मान 1.99 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर दिये गये मान 1.97 से अधिक है, अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत तथा शोध परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। परिणामतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाली छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता में विभिन्नता है।

प्राप्तांकों के विश्लेषण करने पर पाया गया कि 0.05 सार्थकता स्तर पर पारिवारिक वातावरण का सीधा प्रभाव छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता पर पाया गया।

निष्कर्ष-

अध्ययनोपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये-

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्रों के पर्यावरण जागरूकता में अन्तर है अर्थात् प्राप्तांकों के विश्लेषण करने पर पाया गया कि पारिवारिक वातावरण का सीधा प्रभाव छात्रों के पर्यावरण जागरूकता पर है।

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाली छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता में अन्तर है अर्थात् .05 सार्थकता स्तर पर पारिवारिक वातावरण का सीधा प्रभाव छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता पर पाया गया।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में छात्र एवं समस्त समाज पर्यावरण के प्रति गम्भीर नहीं है जो कि अत्यन्त सोचनीय विषय है आज पर्यावरण असन्तुलन की समस्या किसी एक देश की नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व की है। ऐसी स्थिति में छात्रों में पर्यावरण के प्रति एक सकारात्मक सोच विकसित की जानी चाहिए क्योंकि यही छात्र कल के प्रशासक, नेता, अभियन्ता, सामाजिक कार्यकर्ता और विचारक बनेंगे। यदि आज उनके हृदय में पर्यावरण संरक्षण की भावना एवं पर्यावरण के प्रति उनकी सकारात्मक सोच को जागृति किया गया तो ही कल वे पर्यावरणीय समस्याओं को नियन्त्रित कर सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कुमार, धर्मेन्द्र एवं अजीम, शकीला (2022). जहानाबाद जिले में उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं वाणिज्य वर्ग के छात्र व छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ आटर्स एण्ड एजुकेशन रिसर्च, वॉ0 11, इश्शू-4, पृ0 44-49

- कुशवाहा, एस0एस0 एवं देवी, ममता (2015). उच्च माध्यमिक स्तर के कला व

विज्ञान वर्ग के छात्र व छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन, एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड टेक्नोलॉजी, वॉ0 5(2), पृ0 143-147

- देवी, मन्जू एवं चतुर्वेदी, कामना (2019). पर्यावरण जागरूकताः एक अवलोकन, रिसर्च रिव्यु इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्पिलनरी, वॉ0 4, इश्शू-2, पृ0 463-466
- वर्मा, मालती (2016). छात्रों में पर्यावरण के प्रति नैतिक जागरूकता हेतु शिक्षा की भूमिका, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च इन साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, वॉ0 3, इश्शू-6, पृ0 668-674
- सिंह, संगीता (2018). बालकों को पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च इन साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, 4(5), पृ0 516-519
- श्रीवास्तव, शिवानी (2015). उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता, सन्दर्भ (वैश्विक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य), 5(1 एवं 2), जून एवं दिसम्बर 2015 पृ. 31-44

Disclaimer/Publisher's Note:
The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.